# नीरजा माधव के 'यमदीप' तथा महेंद्र भीष्म के 'किन्नर कथा' उपन्यास में किन्नर विमर्श

डॉ. ज्ञानेश्वर भाऊसाहेब जाधव
हिंदी विभाग
शिवनेरी महाविद्यालय, शिरुर अनंतपाळ

हमारा सम्पूर्ण समाज दो स्तम्भों पर खड़ा है, वह है पुरुष और स्त्री। आदिम सभ्यता से ही सामान्यत: दोनों का कार्य– आपसी सहयोग से बच्चे पैदा करना और मानव जाति को आगे बढ़ाना। लेकिन हमारे मानव समाज में इन दो लिंगों के अतिरिक्त एक अन्य लिंग की प्रजाति का अस्तित्व मौजूद है। जो न तो स्त्री वर्ग में आता है और न पुरुष वर्ग में और न ही सम्बन्ध बना सकता है और न ही वह गर्भ धारण कर सकता है। इसी वर्ग को समाज द्वारा दिया गया नाम हिजड़ा है। हिंदी में इनके लिए किन्नर, उर्दू में हिजड़ा, पंजाबी में खुसरा, गुजराती में पवैय्या आदि शब्द प्रचलित हैं। इन्हें शिखंडी, मौगा, छक्का और खोजा भी कहा गया है। आज सरकार और सामाजिक संगठनों ने ट्रांसजेंडर यानी तीसरा लिंग सम्बोधन दिया है। थर्ड जेंडर अर्थात् न नर, न नारी दोनों के गुणों का समुच्चय। थर्ड जेंडर में उन व्यक्तियों को समाहित किया जा सकता है जिनका जन्म पुरुष जननांग के साथ हुआ है किंतु वह स्वयं को पुरुष की श्रेणी में असहज पाता है और स्त्री प्रवृत्तियों का भी अनुपालन करता है। भारत के विभिन्न राज्यों में किन्नरों की स्थिति, संस्कृति और उनसे जुड़ी परंपराएँ अलग–अलग हैं। इन किन्नरों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। समाज में किन्नरों को अत्यंत नकारात्मक एवं हेय दृष्टि से देखा जाता है। लोग इन्हें देखकर घृणा करते हैं। लेकिन आज सामाजिक जाग्रति एवं किन्नरों को दिए गए कानुनी अधिकारों की वजह नाम लेने के लिए लज्जित होनेवाले समाज में आज किन्नर या थर्ड जेंडर पर चर्चाएँ हो रहीं हैं। इनको तीसरे लिंग के रूप में मान्यता देकर इनके अस्तित्व की एक सशक्त पहचान मिली है। इस समाज को सशक्त बनाना यह एक बहुत बड़ी चुनौति है लेकिन सकारात्मक प्रयास समाज और सरकार द्वारा किए जा रहे हैं। इसी वजह से एक दिन किन्नर भी स्वाभिमान के साथ जीवन जीते हुए दिखाई देंगे इसमें कोई दो राय नहीं है।

२१वीं सदी के साहित्य में सदियों से उपेक्षित, पीड़ित और शोषित यह जो लिंगनिरपेक्ष समाज, बहिष्कृत किन्नर या थर्ड जेंडर समुदाय पर चिंतन और चर्चा तेज़ हुई है। हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श की शुरुआत सन् २००० के बाद ही हुई है। हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श की शुरुआत नीरजा माधव जी का उपन्यास 'यमदीप' से माना जाता है। तब से साहित्यकारों का ध्यान किन्नर लेखन की तरफ़ गया। उसके बाद मनमीत पत्रिका में 'किन्नर विशेषांक' निकला जो किन्नर जीवन के यथार्थ से जुड़ा हुआ है। 'यमदीप' उपन्यास के बाद कथाकार महेन्द्र भीष्म ने 'किन्नर कथा' उपन्यास लिखकर किन्नर जीवन के अनछुए पहलुओं को यथार्थ रूप में चित्रित करने का सफल प्रयास किया। इन उपन्यासों के अलावा और भी उपन्यास किन्नर विमर्श पर लिखे गए हैं लेकिन मैं यहाँ नीरजा माधव के 'यमदीप' और महेन्द्र भीष्म के 'किन्नर कथा' इन उपन्यासों में चित्रित किन्नर जीवन के तमाम पहलुओं पर चर्चा करनेवाला हूँ।

किन्नर विमर्श पर लिखा गया हिंदी का पहला उपन्यास 'यमदीप' है जिसकी लेखिका नीरजा माधव हैं। इस उपन्यास में लेखिका ने हिजड़ों की जिंदगी के ज्ञात–अज्ञात सभी पहलुओं को पूरी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया है। 'यमदीप' का कथानक हिजड़ा 'नाज़बीबी' के इर्द–गिर्द घूमता है।

वह इस उपन्यास की नायिका है। जब 'नाज़बीबी' पैदा हुई, घरवाले परेशान हैं क्योंकि बच्चा हिजड़ा है। 'नाज़बीबी' का पहले नाम 'नंदरानी' था। नंदरानी से उनकी माँ बेहद प्यार करती। यह पढ़ाई में बहुत तेज़ थी। लेकिन आठवीं कक्षा में पढ़ते वक्त उसे दाढ़ी, मूँछ भी आ गई। समाज उन्हें देखकर हँसने लगा। समाज के भय से तंग आकर माँ–बाप हमेशा सोचते की इसका क्या करे। समाज के द्वारा हो रहा अपमान और माता–पिता की हो रही प्रताड़ना को 'नाज़बीबी' सह नहीं सकी और उन्होंने हमेशा के लिए अपने माता–पिता का घर छोड़कर हिजड़ों की बस्ती में चली गई। यहाँ आकर उसका नाम 'नाज़बीबी' रखा गया। अगर उसे परिवार द्वारा संरक्षण मिलता और समाज द्वारा उसकी अवहेलना नहीं होती तो इस गंदी बस्ती में आकर बसने से बचती और अपने जीवन को नरकीय वेदना से बचा सकती। लेकिन परिवार और समाज की संवेदनहीनता की वजह से एक होनहार लड़की का जीवन बर्बाद हो गया यह रचनाकार यहाँ दिखाना चाहते हैं।

हिजड़ों की इस दुनिया में बुजुर्ग व्यक्ति उनके गुरू होते हैं। इस उपन्यास में उनके गुरू का नाम महताब गुरू है। नंदरानी के माता–पिता जब उसे अपने पास रखकर पढ़ा–लिखाकर उसे अपने पैरों पर खड़ा करवाने की बात करते हैं, तो महताब गुरू द्वारा एक सवाल उठाया जाता है कि– "माता जी किसी स्कूल में आज तक हिजड़ा को पढ़ते–लिखते देखा है? किसी कुर्सी पर हिजड़ा बैठा है? पुलिस में, मास्टरी में, कलेक्टरी में, किसी में भी? अरे इसकी दुनिया यही है माता जी? कोई आगे नहीं आएगा कि हिजड़ो को पढ़ाओ, लिखाओ, नौकरी दो, जैसे कुछ जातियों के लिए सरकार करती है।"[१] गुरू के इस वाक्य के द्वारा लेखिका सरकार भी इस वर्ग के लिए कुछ करती हुई नज़र नहीं आ रही है इस पर दृष्टि डालना चाहती है। यहाँ तक की समाज की, घर–परिवार के सदस्यों की संवेदनशून्यता की भी बात महताब गुरू द्वारा की गई है। जहाँ तक परिवार की बात है अगर किसी परिवार में बच्चा लंगड़ा, लूला, अंधा, काना पैदा होता है तो उसे समाज उसी रूप में स्विकार करता है, उसके भरण–पोषण की जिम्मेदारी परिवारवाले उठाते हैं। लेकिन जननांग विकार के साथ पैदा हुए बच्चे की तरफ नफरत की दृष्टि से देखते हैं, उसकी अवहेलना करते हैं जो कि उस बच्चे का कोई दोष नहीं होता। यह समाज शारीरिक विकलांग व बीमार बच्चों को तो स्विकार करता है लेकिन जननांग विकार युक्त बच्चों का स्विकार नहीं करता, इस वास्तविकता से भी यह उपन्यास हमें परिचित कराता है। यह वर्ग बेरोज़गारी या धन के अभाव की वजह से वेश्यागिरी करने पर मज़बूर है। महताब गुरू नाज़बीबी और सब किन्नरों को जीवन के बारे में समझाते हुए कहते हैं कि वेश्यागिरी करने से यौनरोग बढ़ते हैं, लेकिन चमेली का संवाद दिल को झकझोर के छोड़ देता है– "तन को भगवान ने आधा टूकड़ा बनाया कि किसी लायक नहीं रहे और पेट? पेट तो नहीं बंद करके भेजा। वह तो खुला ही है रोज भरो, रोज खाली।"[२] यह संवाद स्पष्ट करता है कि नाच–गाकर जितना धन उनको मिलता है उससे उनकी उपजीविका नहीं चलती इसलिए मज़बूरीवश वेश्यावृत्ति करनी पड़ती है। इस उपन्यास के जरिए लेखिका समाज को यह संदेश देना चाहती है कि जिस प्रकार हम विकलांग बच्चों का पालन–पोषण, शिक्षा की जिम्मेदारी लेते हैं वैसे ही जननांग विकार से युक्त बच्चों को भी उच्च शिक्षा देनी चाहिए, परिवार से उन्हें निष्कासित नहीं करना चाहिए। आज संवैधानिक बदलाव की वजह से परिस्थितियाँ कुछ बदली हैं लेकिन और भी बहुत कुछ सामाजिक बदलाव की आवश्यकता है।

किन्नर विमर्श पर लिखा गया महेंद्र भीष्म का 'किन्नर कथा' उपन्यास बहुत ही चर्चित उपन्यास है। 'किन्नर कथा' उपन्यास में कथाकार लिंगोपासक समाज से प्रश्न करते हैं कि क्यों तृतीयपंथी लोगों को सहारा नहीं दिया जाता। किन्नरों को सिर्फ आम जनता ही नहीं, बड़े–बड़े राजघराने के राजा–महाराजा भी अपनाने से डरते हैं, इसका वर्णन प्रस्तुत उपन्यास में है। इसमें महाराज जगतसिंह के घर दो जुड़वाँ 'सोना' और 'रूपा' राजकुमारियों का

जन्म होता है। कुछ दिनों बाद महाराज को सोना की अपूर्णता का ज्ञान होता है तब अपनी झूठी शान को बचाए रखने के लिए दीवान को उसकी हत्या का आदेश देता है। दीवान का मन पिघल जाता है और वह उसे न मारकर किन्नर गुरू तारा के हाथ सौंप दिया जाता है। यह 'सोना' किन्नरों में 'चंदा' नाम से प्रचलित हो जाती है, वह अच्छी नृत्यांगना बन जाती है। 'तारा' गुरू ने अपने जीवन के स्वयं के अनुभव द्वारा 'चंदा' को राजकुमारी की तरह पाला और अच्छे संस्कार दिए। यहीं चंदा किन्नरों के डेरे में १५ साल पली–बढ़ती संयोग से १५ साल बाद अपनी बहन की शादी में बधाई देने जाती है तो उसे अपना अतीत याद आ जाता है, वे अपने घर को पहचानती है। तब उसकी माँ उसे अपनाने की कोशिश करती है लेकिन महाराज तब भी चंदा को मारने को तैयार हो जाते हैं। किन्नर विमर्श पर के उपन्यासों में बच्चों के प्रति माँ के प्यार एवं संवेदना को दिखाया गया है लेकिन पिता द्वारा या पुरुष, समाज द्वारा अपनाते हुए नहीं दिखाई दिया। लेकिन अंत में जगतसिंह हो या तारा गुरू का भतीजा मनीष हो, इस पुरुष वर्ग के ऱ्हदय परिवर्तन की बात की है। उपन्यास में युवा और शिक्षित मनीष जैसे समझदार लोग, जो लैंगिक भेदभाव को मिटाने की भरपूर कोशिश करते हुए दिखाई देते हैं, साथ ही मनीष तारा को किन्नर रूप में स्वीकार करता है और उसके साथ जीवन बिताने की शपथ लेता है। वहीं चंदा की सर्जरी करवा के ठीक कराने की बात आती है तो उसे स्विकार करता हुआ डॉक्टरों से चर्चा के बाद चिकित्सीय परिक्षण और सामान्य ऑपरेशन के बाद सोना के सुखद भविष्य की तस्वीर दिखाई गई है। उपन्यास की मुख्य पात्र 'तारा' किन्नर गुरू है जो सोना को सम्मानजनक जीवन देती है। क्योंकि उन्होंने किन्नर होने की जो असीम पीड़ा है, उसको भोगा है। उस पीड़ा की अभिव्यक्ति करती हुई वह कहती है– ''भगवान ने मेरे साथ ऐसा अन्याय क्यों किया? मैं हिजड़ा हूँ तो इसमें मेरा क्या कसूर? मुझ निर्दोष को किस बात की सजा मिल रही है? मेरा अपना कौन है? घर–बार, माँ–बाप, भाई–बहन, बच्चे कोई नहीं है मेरा, जिसे मैं अपना कह सकूँ, सब कुछ होते हुए भी कोई मुझसे रिश्ता नहीं रखना चाहता, कोई मुझे अपनाने को तैयार नहीं है। बचपन से आज तक बस अपने आप में ही दर्द पीते हैं। दूसरों को हंसाते आये हैं, उनकी खुशियों में शरीक होते आए हैं, आशीष के सिवा कभी किसी को कुछ नहीं दिया, ईश्वर से बस एक शिकायत है। आखिर क्यूँ उसने हमें ऐसा बनाया? क्यों हिजड़ा होने का दंड दिया? काश! हम भी औरों की तरह स्त्री या पुरुष होते, हिजड़ा होना कितनी बड़ी सजा है, यह कोई हिजड़ा ही समझ सकता है, दूसरा कोई नहीं, कभी नहीं।''[३] किन्नरों के साथ समाज के हेय व्यवहार को उपरोक्त पंक्तियाँ दर्शाती हैं।

इस उपन्यास में लेखक ने इस तथ्य की तरफ सबका ध्यान खिंचा है कि बहुत सारे किन्नरों का चिकित्सा शास्त्र का आधार लेकर उनका लिंगपरिवर्तन करके उनको सामान्यतः एक स्त्री या पुरुष वर्ग में परिवर्तित करके उनके जीवन को सफल बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा के जरिए उनमें सुधार और सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर उपलब्ध कराया जा सकता है। सामान्यजन इस वर्ग के प्रति हमदर्दी दिखाए। किन्नर जीवन को भोग रहे अन्य किन्नर आगे आकर ऐसे बच्चों को शिक्षा, स्नेह, माया, प्रेम जो परिवार द्वारा नहीं मिला वह देने का काम कर रहे हैं। उपन्यास की पात्र 'तारा' जब सोना को अपने पास रखती है तब उसके लालन–पालन करने के लिए मातिन का सहयोग माँगते हुए कहती है– ''बैलगाड़ी में सो रही बच्ची हमारी तरह है, बहुत बड़े घर–परिवार से है, उसका लालन–पालन हमें करना है।''[४] यहाँ यह स्पष्ट है कि सोना को हिजड़ा होने के कारण परिवार से बिछड़ना पड़ा। तब तारा ही उसे माता–पिता का प्यार देती है। उन तमाम बुराइयों एवं दुःखों से 'सोना' को बचाने की जिंदगीभर कोशिश करती है। 'सोना' को सम्मानजनक जीवन मिले इसलिए उसे अच्छी नृत्यांगना बनाती है। उपन्यास में कुछ नकली हिजड़ों की चर्चा भी की गई है जो हमेशा रात में लोगों की लूटपाट करते हैं। ऐसे लोगों के कारण

हिजड़ों की समाज में बदनामी हो रही है लेकिन हिजड़ों की अपनी संस्कृति में किसी का नुकसान करना, लूटपाट करना पाप माना जाता है, हिजड़े जिंदगी भर कभी भी गलत काम नहीं करते क्योंकि उनकी धारणा है कि अगर अगला जन्म हिजड़ा रूप में न हो इसलिए जिंदगी में कोई बुरा काम नहीं करना चाहिए। इस तरह बहुत सारे सवाल उपन्यास में उठाए गए हैं। जो इस वर्ग की इस पीड़ा के लिए सिर्फ और सिर्फ उसका परिवार, समाज और सरकार दोषी है। इन सबको मिलकर हाशिए पर रखे गए इस उपेक्षित वर्ग को सामान्य जीवन देने के लिए हम सबको भरसक प्रयास करने की जरुरत है। इस दलदल से बाहर निकालने का काम हम उच्च शिक्षितों का है और इसके लिए हमें पूरी ईमानदारी के साथ प्रयास करने की आवश्यकता है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि किन्नर वर्ग का जीवन बड़ा ही कष्टदायक, क्लेशदायक, हेयपूर्ण है। इस वर्ग को हमें सम्मान देने की आवश्यकता है, साथ ही शिक्षा और नौकरी देकर उसे मुख्यधारा में लाने की आवश्यकता है। इसके लिए सरकार, परिवार और समाज को मिलकर काम करना होगा तभी हम इस सदियों से वंचित, पीड़ित, शोषित, हेय जीवन जीने के लिए मज़बूर वर्ग को मुख्यधारा से जोड़कर उनको सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार दे सकते हैं। इस वर्ग को उन तमाम समस्याओं से मुक्त कराना हम सबके जीवन का उद्देश होगा तभी यह बात संभव हो पाएगी कि किन्नरों का जीवन एक सामान्य मनुष्य जीवन की तरह रहेगा। जब हम उनको सामान्य जीवन देने में सफल होंगे। तब इनके सामने अपनी अस्मिता की रक्षा का प्रश्न नहीं रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ :

१. यमदीप– नीरजा माधव (२००२), सुनील साहित्य सदन, दिल्ली।
२. किन्नर कथा– महेंद्र भीष्म (२०१४), सामयिक प्रकाशन, दिल्ली।
३. भारतीय साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंगी विमर्श– संपादक: डॉ. विजेन्द्र प्रताप सिंह, रवि कुमार गौंड़ (२०१६), अमन प्रकाशन, कानपुर।
४. साहित्य में किन्नर विमर्श की आवश्यकता– डॉ. आर. पी. वर्मा
५. २१वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में किन्नर जीवन के अनछुए पहलू– मिलन बिश्नोई